स्वतंत्र रचनात्मक लेखन को सुदृढ़ करना

कलन्दर एस.

कोई भी सीख ठहरी हुई नहीं होती; यह एक गतिशील, विकासशील प्रक्रिया है। नए-नए विचार और सोच उभरते रहते हैं और पुरानी बातों को संशोधित करते रहते हैं। इस प्रकार का परिवर्तन निरन्तर अभ्यास, अनुभव और नए विचारों की खोज पर निर्भर करता है। चूँकि इस प्रक्रिया में बच्चे की रुचि की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, इसलिए हम किसी बच्चे की रुचि को किसी रचनात्मक कार्य के लिए कैसे मोड़ सकते हैं, यह एक महत्त्वपूर्ण विचार है। किसी बच्चे को मानक लेखन (सरल वाक्य, वाक्यांश, विवरण आदि) से स्वतंत्र और रचनात्मक अभिव्यक्ति (किसी भी विषय को अपनी अनूठी शैली में प्रस्तुत करना, अपने विचारों को सही ठहराने के लिए तार्किक चिन्तन को जोड़ना आदि) की तरफ़ बढ़ने में कैसे मदद करें, यह किसी भी शिक्षक के लिए एक चुनौती होती है। यह लेख इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास करता है।

यदि रचनात्मक सोच या कल्पना को स्वतंत्र लेखन के साथ जोड़ दिया जाए तो लेखन निखरता है। अपनी अनूठी शैली और शब्द संरचनाओं का उपयोग करना और तार्किक चिन्तन के साथ विचारों को व्यक्त करना स्वतंत्र लेखन का निर्माण करता है। क्या हमारी कक्षाओं में विद्यार्थियों में ऐसे स्वतंत्र और रचनात्मक लेखन कौशल विकसित करने के पर्याप्त अवसर हैं? हमें अपनी कक्षाओं में सीखने के परिणामों, शैक्षणिक मॉडलों और ऐसी प्रक्रिया के लिए प्रदान किए जाने वाले अवसरों का विश्लेषण करने की आवश्यकता है।

एक भाषा शिक्षक सीखने के परिणामों के आधार पर विभिन्न कौशलों का परिचय देने के लिए लगातार विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करता है। विद्यार्थियों द्वारा इन कौशलों को सीखने को होमवर्क, पढ़ने, टर्म टेस्ट आदि के माध्यम से उनका मूल्यांकन करके सुदृढ़ किया जाता है।

हालाँकि, जब रचनात्मक लेखन की बात आती है, तो हमें ख़ुद से पूछना चाहिए कि *क्या विद्यार्थियों के पास इन कौशलों में महारत हासिल करने और नया व मौलिक लेखन उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त समय होगा*? जवाब न है। क्या तब शिक्षक के लिए यह प्रश्न स्वाभाविक नहीं है कि क्या बच्चों में स्वतंत्र और रचनात्मक लेखन के कौशलों को विकसित करना महत्त्वपूर्ण है? रचनात्मक लेखन का क्या फ़ायदा है? एक बच्चा कहानियाँ और कविताएँ लिखकर क्या हासिल करेगा? यह अच्छे जीवन के लिए भोजन, पानी, हवा या नौकरी जैसी बुनियादी आवश्यकता नहीं है। लेकिन यदि हम गहराई से देखें तो प्रतिदिन की समस्याओं को हल करना सीखना और सामाजिक एवं संचार कौशल जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं और इन्हें रातों-रात प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इनका विकास केवल निरन्तर अभ्यास और उपयोग के माध्यम से ही होता है। ये सभी किसी व्यक्ति की स्वतंत्र सोच और रचनात्मकता का हिस्सा होते हैं।

यदि हम बच्चों में स्वतंत्र और रचनात्मक लेखन का विकास करना चाहते हैं, तो इसके लिए पहला क़दम है उन्हें अपनी

सीखने की कुछ गतिविधियाँ जिनका उपयोग वर्तमान में कर्नाटक में स्वतंत्र और रचनात्मक लेखन को सुगम बनाने के लिए किया जा रहा है।

1.	चित्र बनाना और वह क्या है यह उसके नीचे अपनी घरेलू भाषा में लिखना। उदाहरण : एक हाथ पंखे का चित्र बनाएँ और उसका नाम लिखें (कन्नड़ा में बीसानिगे)।
2.	जीवन के अनुभवों और उन चीज़ों के बारे में लिखना जो वे अपने आस-पास देखते हैं।
3.	अपने पसन्दीदा विषयों पर कहानी या कविताएँ लिखना और इन्हें कक्षा में प्रस्तुत करना।
4.	कहानियाँ, कविताएँ या विवरण लिखने में भाषा का अधिक रचनात्मक प्रयोग करना।
5.	अपनी कल्पना से अपने शब्दों में कहानियाँ लिखना।
6.	अन्य लोगों के अनुभवों के बारे में या अन्य लोगों को बात करते हुए सुनकर उन्हें जो मालूम होता है उसके बारे में लिखना। उदाहरण : सार्वजनिक नलों, बस स्टैंड या शहर के चौराहों जैसे सार्वजनिक स्थानों पर होने वाली बातचीत।
7.	पोस्टर बनाना – लिखना और सामग्री एकत्र करना, दोनों।
8.	भाषा की बारीक़ियों एवं प्रणाली को व्यवहार में लाना। उदाहरण : कविताओं में शब्दों के अर्थ और लय को समझकर उन्हें बदलना (परिवर्तन करना)।
9.	पाठकों और अपने लेखन के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रभावी ढंग से लिखना।

भावनाओं, अनुभवों, विचारों, कल्पना, अनुमानों और तर्क को विभिन्न तरीक़ों से व्यक्त करने का मौक़ा देना। जब हम उनके लिए ये दरवाज़े खोलेंगे सिर्फ़ तभी बच्चे स्वतंत्र और रचनात्मक लेखन की दिशा में प्रगति कर सकते हैं। आइए देखते हैं कि इसे एक सतत प्रक्रिया बनाने के लिए हम क्या कर सकते हैं।

बच्चों से पाठ करवाना

हम अपने विद्यार्थियों को अपनी कक्षाओं में कहानियाँ और कविताएँ लिखने का अवसर देते हैं। ये सीखने के अपेक्षित परिणामों पर आधारित होते हैं। हम उन्हें ऐसी कहानियाँ और कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित करते है जिनके माध्यम से उनकी कल्पना अनन्त क्षितिज तक उड़ान भर सकती है। निरन्तर प्रयास से एक बच्चा 15 दिन या एक महीने के अन्दर एक या दो कविताएँ लिख ही लेगा, लेकिन अगर हम इससे हटकर अन्य सीखने के परिणामों की ओर चले जाएँ, तो इस कौशल विकास पर काम रुक जाता है। अभ्यास की कमी के कारण बच्चा धीरे-धीरे यह कौशल भूल सकता है। यही कारण है कि शिक्षक स्कूलों में कविताओं या कहानियों का पाठ आयोजित करते हैं, ताकि इन कौशलों को सुदृढ़ और जीवित रखा जा सके और बच्चे के भीतर विभिन्न विषयों और लेखन शैलियों में रुचि विकसित हो सके।

स्कूल पत्रिका

विद्यार्थियों के बीच रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने और बढ़ावा देने का एक और तरीक़ा स्कूल पत्रिका है। हम बच्चों से कहानियाँ, कविताएँ, लेख, नाटक, पुस्तक समीक्षाएँ, अनुभव, विचार, राय और लेखन के अन्य रूप एकत्र करते हैं और इन्हें पत्रिका में प्रकाशित करते हैं। विद्यार्थी अपने परिवेशों, लोगों, त्योहारों, मेलों और कार्यक्रमों के बारे में लिखते हैं। उन्हें खोजबीन करके विभिन्न पहलुओं को अपने लेखन में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। जैसे ऐसे आयोजनों का महत्त्व, उनका इतिहास और उन्हें कैसे मनाया जाता है। अपने द्वारा एकत्र की गई जानकारी के साथ अपने विचार व्यक्त करना और अपने प्रस्तुतिकरण में विचारों को तार्किक रूप से और निरन्तरता के साथ रखना सीखना ऐसे कौशल हैं जो न केवल उच्च कक्षाओं में बल्कि जीवन भर आवश्यक होते हैं।

मार्गदर्शन देना

इन लेखन गतिविधियों में बच्चों को मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। बच्चों को अपनी कहानियाँ और कविताएँ लिखने के लिए मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देने के लिए शिक्षक कार्यशालाओं की व्यवस्था कर सकते हैं और अनुभवी लेखकों को आमंत्रित कर सकते हैं। इस तरह, उन्हें सक्रिय

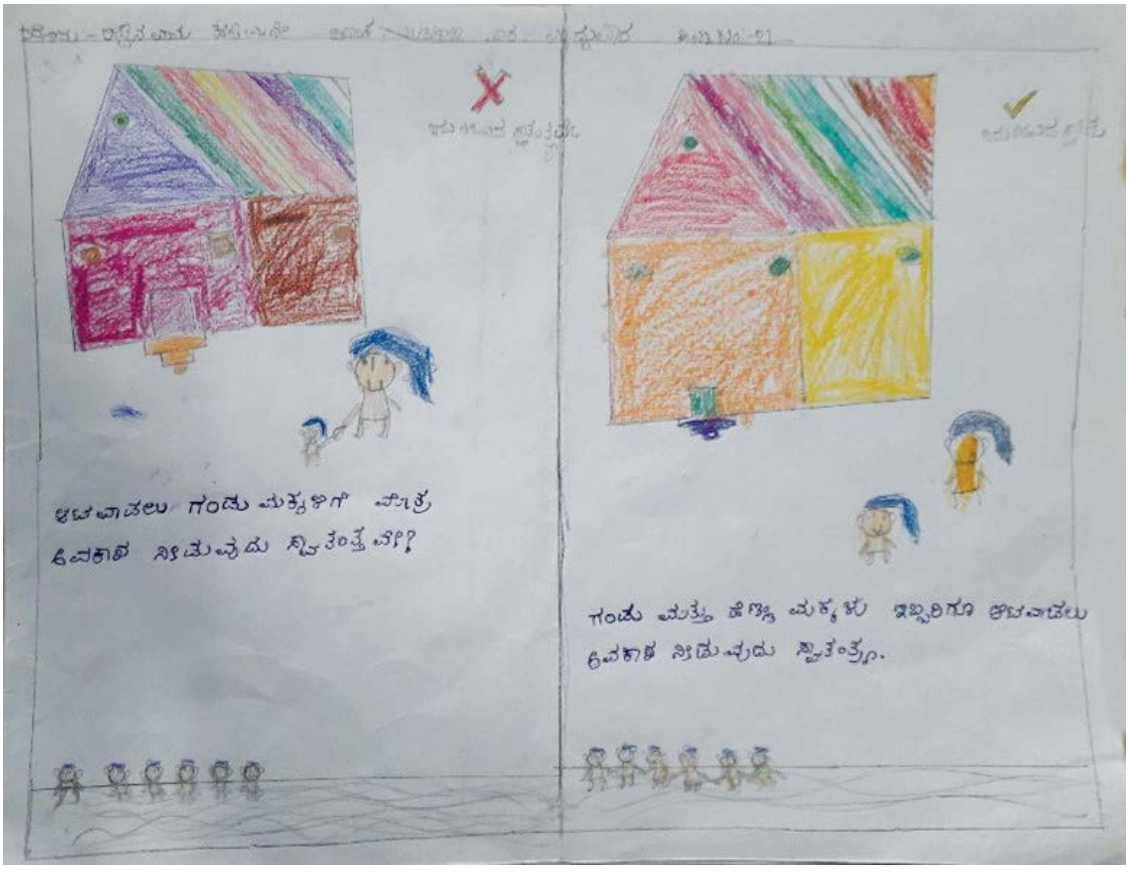

चित्र-1 : *लैंगिक भेदभाव पर अपना विचार व्यक्त करती एक विद्यार्थी की ड्रॉइंग।*

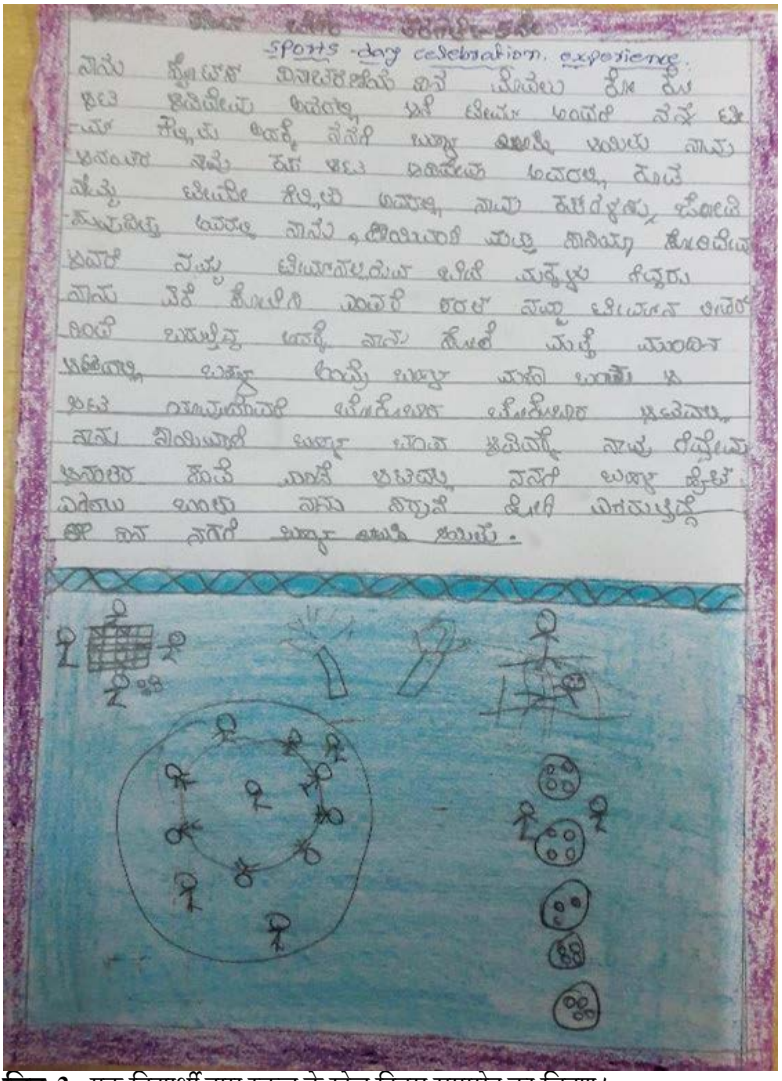

चित्र-2 : *एक विद्यार्थी द्वारा स्कूल के खेल दिवस समारोह का चित्रण।*

रूप से रचनात्मक लेखन में संलग्न होने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। विशेष दिवस समारोहों और उत्सवों के दौरान विद्यार्थियों को इन पर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया जा सकता है।

इन गतिविधियों को स्कूल के बाहर भी बढ़ाया जाना चाहिए, उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों के लिए उनके गाँव या समुदाय में रीडिंग क्लब बनाकर। बच्चों को जोड़ियों या समूहों में काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए ताकि वे एक-दूसरे को प्रेरित कर सकते हैं। विचारों के आपसी आदान-प्रदान से उनकी रचनात्मकता और लेखन कौशलों को निखारने में भी मदद मिलेगी। महत्त्वपूर्ण बात है कि शिक्षक यह महसूस करें कि स्वतंत्र लेखन एक महत्त्वपूर्ण कौशल है और इसे अभ्यास और मज़बूत किए जाने की आवश्यकता होती है। शिक्षकों को इन कौशलों को सुदृढ़ करने के लिए अवसर बनाने की आवश्यकता है।

कलन्दर एस. यादगीर के अज़ीम प्रेमजी स्कूल में कन्नड़ा पढ़ाते हैं। उनके पास मास्टर डिग्री है और वे सभी कक्षाओं को पढ़ाते हैं। उनसे *Kalandar.s@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : हिमांशु बावनकर **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय